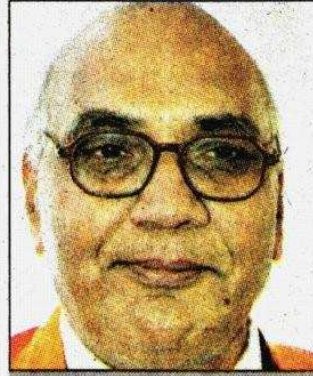


फ्यूल से नहीं, हवा से दौड़ेगी बाइक

- प्रो. भरत राज सिंह ने तैयार किया एयर इंजन, लागत 55 हजार
- एक बार टैंक भरने पर तय करेगी 40 किमी का सफर
- थाइलैंड एवं कनाडा की कंपनियों ने दिया निर्माण का प्रस्ताव

लखनऊ। अभी तक आपने हवा से बात करती बाइक जुमलों में सुनी या फिल्मों में देखी होगी, लेकिन हवा से चलने वाली बाइक की कल्पना नहीं की होगी। इस कल्पना को साकार किया है प्रो. भरतराज सिंह ने। गौतम बुद्ध प्राविधिक विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रो. सिंह ने हवा से चलने वाला इंजन तैयार किया है। इसमें फ्यूल की जगह पहियों में भरी जाने वाली हवा को इंजन में इस्तेमाल कर बाइक चलाई जा सकेगी। प्रो. सिंह ने यह तकनीक पेटेंट करा ली है और जनवरी में इसके नोटिफिकेशन के बाद निकट भविष्य में बाजार में हवा से दौड़ने वाली बाइक हकीकत की शक्ल ले सकती है।

एसएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के एसोसिएट डायरेक्टर प्रो. भरतराज सिंह ने बताया कि भारत एवं चीन जैसे विकासशील देशों में हल्के वाहनों का उपयोग प्रदूषण का प्रमुख कारण है। वायुमंडल में लगभग 77.8 फीसदी प्रदूषण ट्रांसपोर्टेशन के चलते होता है। ऐसे में यह तकनीक 50-60 फीसदी प्रदूषण कम करने में मदद करेगी। प्रो. सिंह ने एचबीटीआई कानपुर के प्रो. ऑफर सिंह के निर्देशन में कंप्रेस्ड एयर पावर्ड



प्रो. भरतराज सिंह

मोटरसाइकिल इंजन का निर्माण किया है। उनके मुताबिक बाइक में पेट्रोल टैंक की जगह एयर टैंक लगाया जाएगा। इसमें हवा विद्युत चालित कंप्रेसर से आसानी से भरी जा सकेगी। बाइक का इंजन एयर टरबाइन मॉडल पर विकसित किया गया है, जिसका मोटर फ्यूल टैंक में भरी कंप्रेस्ड एयर के निकलने से चलने लगेगा। फलस्वरूप उत्पन्न ऊर्जा से बाइक चलेगी। टैंक में एक बार उसके आयतन के 20 गुना हवा भरने पर यह 40 किमी तक का सफर आसानी से तय कर सकती है, जिसमें बमुश्किल पांच रुपए का खर्च आएगा। खास बात यह है कि पहियों में उपयोग होने वाली हवा सामान्य मशीन से भराई जा सकेगी। बकौल प्रो. सिंह, फिलहाल इंजन की लागत 50-55 हजार रुपये आ रही है, लेकिन व्यावसायिक निर्माण में इसकी कीमत घटेगी और 70 हजार रुपये में पूरी बाइक तैयार हो जाएगी। हालांकि वह कहते हैं कि अभी इंजन और बाइक में कुछ और तब्दीलियां की जानी हैं, जिससे यह अधिक दूरी तय कर सके। इसके लिए उनके निर्देशन में देश-विदेश के 10 शोध छात्र काम कर रहे हैं। भविष्य में इस तकनीक से सीलिंग फैन, मिक्सी और वैक्यूम क्लीनर सहित कई अन्य घरेलू उपकरणों को भी चलाया जा सकेगा। तकनीक का पेटेंट कराया जा चुका है और जनवरी में सरकार द्वारा इसका नोटिफिकेशन हो जाएगा। उन्होंने बताया कि थाइलैंड एवं कनाडा की दो कंपनियों ने उन्हें उनके इस मॉडल पर उत्पादन के लिए ऑफर किया है। पेटेंट के बाद वह इसके व्यावसायिक इस्तेमाल की दिशा में कदम बढ़ाएंगे। हालांकि किसी भारतीय कंपनी से ऑफर मिला तो उससे यह आइडिया शेयर करना उनकी पहली प्राथमिकता होगी।